

जय श्री राम

- (१) आज अपनी हकीकत की क्यों न एक
पहचान हो जाए |
खुद की डूबती कश्तियों के नाम एक
शाम हो जाए ॥
- (२) खुद को जीने का मन करता है अब
मुद्तो बाद
ये सुबह भी न शाम तक करार हो जाए
- (३) आज दिल में जो है वो लिख दूं
तो कैसा हो,
सरेआम आज वजूद कर दूं तो
तो कैसा हो
- (४) देर हो गयी है बहुत यार ये सोचकर
टूट चुके हैं
फिर भी अपने कदमों को जमानत पर
रिहा कर दूं तो कैसा हो....
- (५) तेरे आने का इन्तजार कुछ यूं
रहा हमको
एक हमदर्द को हो दर्द पर एतबार जैसे....
- (६) सुन - ए हवा आज हम एक नया
ऐलान करते हैं,
खुद को गिरवी न रखेंगे ज़माने के
शोर से
- (७) बदलना पड़ेगा खुद को नहीं तो
हम खाक हो जाएंगे,
राख होने से पहले शोलो को खाक
कर जाएंगे

काश कि इस ख्याल से हम
उभर आए कि,
जिन्दगी के कदमों में घुंघरू
हमने बांधे है ।

शिवभूषण शरण सिंह
“शिवसिंह आर. राजपूत”
(BA SEM – 6)